नाट्यधर्मी हबीब तनवीर के 'देख रहे हैं नैन' नाटक में मानवीय संवेदना

– डॉ. अवधेश झा

नाट्यधर्मी हबीब तनवीर (1923–2009) का अर्थ है कि अपने जीवन का संपूर्ण 'नाटक और रंगमंच' के हेतु प्रतिबद्ध कर देना, जिसमें नाट्य ही कर्म और धर्म है। हबीब तनवीर ने अपनी इस नाट्यधर्मिता की यात्रा में लोक जीवन की मानवीय संवेदना को निरंतर प्रदर्शित किया। जिसमें संघर्षरत और द्वन्द्वयुक्त तनाव के मध्य मनुष्य की मनुष्यता का जीवंत प्रतिबिंब दृश्यमान होता है। हबीब तनवीर ने जिस प्रकार की मानवीय संवेदना को अपनी नाट्य कृतियों में व्यक्त किया है, उसका मूलाधार लोक की सामाजिक–सांस्कृतिक परंपरा में सन्निहित है, जिसे उन्होंने छत्तीसगढ़ी माटी से गृहित किया है। वहाँ के लोग, उनकी लोक परम्पराएँ, कथाएँ, भाषिक बोलियाँ और कला शैलियों ने हबीब तनवीर को नाटक का नया मुहावरा गढ़ने का अवसर दिया, जिसे 'टोटल थियेटर' कहा जाता है। समग्रता के इसी रंगमंचीय मुहावरे को उन्होंने 'नया थियेटर' (1959) के माध्यम से सृजित किया और अपनी पहचान हिन्दी रंगजगत के साथ ही भारतीय और वैश्विक रंग पटल पर भी बनायी। हबीब तनवीर के 'नया थियेटर' की सभी प्रस्तुतियों की मौलिकता और नवीनता के बारे में भारत रत्न भार्गव का कथन है– "'नया थियेटर' की प्रस्तुतियों में छत्तीसगढ़ी कलाकार जिस व्यवहार की भाषा के सहज उच्चारण और अंतःस्फूर्ति के प्रयोग से स्थानिकता का ऐसा रंग जमाते हैं, जिससे उनका आस्वाद निराला और मनोरम बन जाता है। हबीब तनवीर के मुहावरे को नया सामर्थ्य देने वाला यही आस्वाद है जो उनकी प्रस्तुति की अंतर्धारा को अत्यंत प्रवाहमय और गतिशील बना देता है। उनकी नट–मंडली के सभी कलाकार लोक संपदा के ऐसे तत्वों को जोड़ने लगते हैं कि दर्शक उनकी भाषा, मुद्राओं तथा गतियों के माध्यम से एक अनुभव से गुजरते हैं।"[1] जिससे इनके नाटकों में आधुनिक और समकालीन विषमताओं, विद्रूपताओं से संघर्षरत मानवीय जीवन मूल्यों की संवेदनात्मक अभिव्यक्तियाँ संप्रेषित होती हैं। इसमें जितना मनोरंजन है, उससे कहीं ज़्यादा नाट्यकर्म का अपना कलात्मक धर्म समाहित है। जिसके केंद्र में मानव और उसके संवेदनात्मक जीवन मूल्य हैं।

दरअसल नाट्य एक ऐसी साहित्यिक कला है, जिसकी प्रकिया में जन की संवदेनात्मक अभिव्यक्ति, जन समक्ष ही सार्थक और सफल होती है। यह एक विशिष्ट जीवंत कला है, जहाँ नाटक लिखने, पढ़ने, खेलने, करने और देखने–सुनने वालों की सहभागिता सुनिश्चित होती हैं। जिसके कारण नाट्य जनतांत्रिक मूल्यों का निर्वहन करता है और 'व्यवस्था की अव्यवस्था या व्यवस्था की अव्यवस्था' के मध्य मानव हित की कामना

[1] रंग हबीब- भारतरत्न भार्गव, पृष्ठ संख्या- 209

को प्रदर्शित करता है। नाट्यजीवी हबीब तनवीर के 'देख रहे हैं नैन' नाटक का आलेखन सन् 1992 ई. में पूर्ण हुआ। जिसकी प्रथम प्रस्तुति 'मैक्स मुलर' भवन के सहयोग से 'श्रीराम सेंटर', नई दिल्ली, 7 अगस्त, 1992 ई. में हुई। जिसके बाबत रंग–समीक्षक भारत रत्न भार्गव ने महावीर अग्रवाल से एक साक्षात्कार में कहा–

"हबीब तनवीर की अब तक की नाट्य प्रस्तुतियों में 'देख रहे हैं नैन' संभवतः अकेला नाटक है जो जानी पहचानी स्थितियों से शुरू होकर अनेक नाटकीय मोड़ों से गुजरता हुआ ऐसे मुकाम पर पहुँचता है जो मनुष्य की दैहिक सत्ता उसके उत्कर्ष और अपकर्ष की व्यथा–कथा कहते हुए अंततः मनुष्य की रूहानी अनुगूँज तक पहुँचता है। युद्ध, शोषण और यश की लिप्सा को पूरी तरह निरर्थक सिद्ध करता हुआ विशुद्ध मानवीय संवेदना और निष्प्राण कर्म भावना की श्रेष्ठता को प्रतिपादित करता है। मनुष्य मात्र की सेवा में ही जीवन की सार्थकता सिद्ध कराने वाला यह नाटक संभवतः हबीब तनवीर के लेखकीय सृजन पक्ष का श्रेष्ठतम उदहारण है। हबीब तनवीर के मुहावरे में पूरी तरह ढला हुआ यह नाटक दर्शकों के मन–प्राण पर दूर तक और देर तक असर बनाये रखता है। ....यह गीता भी है, कुरान और बाइबिल भी। यह मार्क्स भी है और गांधी भी, लेकिन यह नाटक मार्क्सवादी सिद्धांतों को परिपुष्ट करने वाला नहीं है। आश्चर्य की बात यह है कि उन सिद्धांतों का खंडन भी नहीं करता। विश्व के सारे धर्म जिस वैराग्य को जीवन का अंतिम सोपान मानते है, हबीब तनवीर उसे पूरी निष्ठा के साथ स्वीकार भी करते हैं और नकारते भी हैं। आलेख की यह विशिष्टता प्रस्तुति में भी पूरी शक्ति के साथ प्रकट हुई है।"[2]

नाटक 'देख रहे हैं नैन' का केन्द्रीय पात्र 'चन्दनपुर' का नागरिक विराट है, जिसकी परिधि में यह नाटक अपनी दार्शनिक अर्थवत्ता की तलाश करता है। नाटक का नायक अपने चारित्रिक संघर्ष तथा तनाव के बीच मानवीय संवेदना को उकेरता चलता है। दरअसल इस 'विराट की कहानी' प्रथम विश्वयुद्ध के बाद सन् 1922 ई. में 'इन्सल लायब्रेरी' सीरियल के संकलन में छपी थी। स्टीफंस ज़्वाइग द्वारा लिखित कहानी को हबीब तनवीर ने 'सन् 1954 में एलिजिबेथ गाबा की मुँहज़बानी सुनी थी। जो कई वर्षों तक हबीब तनवीर के ज़ेहन में उमड़ती–घुमड़ती रही। जिसे उन्होंने जीवन की सच्चाई और उसकी वस्तुनिष्ठता के साथ, मन की सात्विकता के पुनर्पाठ के स्वरूप 'देख रहे हैं नैन' नाम से रच दिया। यह नाटक 'निष्काम कर्म' और 'कर्म ही पूजा" जैसे दार्शनिक उक्तियों से संघर्ष और सवाल करता है। बकौल हबीब तनवीर–

"शायद ऐसा सबके साथ होता है।.... दिल में कुछ सवाल उठने लगते हैं जो हमारे अमल की बुनियादें हिला देते हैं। हम कितनी ही अच्छी नीयत से किसी काम को अंजाम देने में लगे हों, और वो काम दुनिया की नज़रों में कितना ही प्रशंसात्मक हो हम खुद उसे शक की नज़र से देखने लगते हैं। छोटे से छोटा आदमी भी

[2] सापेक्ष:47, सं.- महावीर अग्रवाल, पृष्ठ संख्या- 305

अपने रास्ते में कभी–कभी ठिठक जाता है। ऊँची से ऊँची पदवी वाला अपनी जिंदगी में कभी न कभी इस मंज़िल से गुज़रता है। सामाजिक काम करने वाला व्यक्ति भी एक बार सोच में पड़ जाता है कि वो क्या कर रहा है। दफ़्तर के बाबू को भी कभी–कभी यह फ़िक्र सताने लगती है कि आखिर उसका उद्देश्य क्या है। सिपाही, लीडर भी, चाहे वो कितना ज़मीर–फ़रोश हो, एक बार तन्हाई में शायद यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि आखिर वो किधर जा रहा है।"[3]

समूचे नाटक में हबीब साहब का मानवीय संवेदनायुक्त चिंतन विराट के चरित्र में दृष्टव्य होता है, जिसमें संसार के सभी धर्मों की दार्शनिकता प्रक्षेपित है। जीवन की निःसारता और निष्काम कर्म की बुनियाद पर 'देख रहे हैं नैन' सामाजिक–राजनैतिक व्यवस्था के धुर–पेंचों से सवाल करती है। "यह आदमी का संघर्ष है; या यूँ कहिए कि हर आदमी की समस्या, हर आदमी का संघर्ष।"[4]

नाटक 'देख रहे हैं नैन' में युद्ध की त्रासदी और उससे उत्पन्न विभीषिका का संत्रासयुक्त जीवंत चित्रण किया गया है। जिसमें तनवीर के जीवन की अंतर्दृष्टि और मानवीय मूल्यों की सात्विकता का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। यूरोपीय विचारकों हेतु युद्धरत जीवन से उत्पन्न विभीषिका और त्रासदी के अन्य विकल्प के रूप में भारतीय दार्शनिक चिंतन सदैव तत्पर और प्रस्तुत रहा; पश्चिम के देशों में भारतीय आध्यात्मिकता के प्रति झुकाव सदियों से प्रचलित है। जिससे हमें एक ही समय में 'स्टीफंस' की कहानी तथा 'हरमॉन हैस' के उपन्यास 'सिद्धार्थ' देखने को मिल जाते हैं। 'सिद्धार्थ' का हवाला देते हुए हबीब तनवीर कहते हैं कि "हम दोनों ने एक ही वक्त में ऐसी कथाओं में, जिनका संबंध हिन्दुस्तान से है, मिलते–जुलते विचारों का अनुभव किया है।"[5] नाटक 'देख रहे हैं नैन' की वैचारिकी मानवीय–अंतर्विरोधों के संघर्षरत मांगलिक संवेदना की कामना है। इसका कैनवास अत्यंत विस्तृत एवं व्यापक है–

"इसमें यहाँ एक तरफ शाश्वत शान्ति की आध्यात्मिक तलाश है तो वहीं दूसरी तरफ जंग, भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं हैं। एक तरफ वैराग्य का आदर्शवाद है, तो दूसरी तरफ क्रांति के लिए सामूहिक संघर्ष। इसका कथानक दो स्तरों पर जारी रहता है– एक स्तर पर व्यक्ति बनाम समाज है, तो दूसरे स्तर पर राजतंत्र बनाम लोकतंत्र। इस कर्म में दर्शन और राजनीति के साथ–साथ अलौकिक और लौकिक के बीच जो असंगति है वह बड़े स्पष्ट तरीके से स्थापित होती है। इस नाटक का मूल सूत्र यह है कि एक अकेले की मुक्ति उस वक्त मुमकिन नहीं जब तक कि पूरे समाज को मोक्ष न मिल जाए। यही इस नाटक की एकनीति है।"[6]

[3] देख रहे हैं नैन- हबीब तनवीर, विराट क्यों?, पृष्ठ संख्या- 6
[4] वही
[5] वही, पृष्ठ संख्या- 10
[6] कलावार्ता- हबीब तनवीर : जनरंग की राजनीति : शाहिद अनवर, अंक-103, पृष्ठ संख्या- 171

हबीब तनवीर का यह नाटक युद्धों की ऐतिहासिक विभीषिका और त्रासदी के मध्य वर्तमान समकालीन जीवन मूल्यों के संकट एवं विकल्प की ओर संकेत व सचेत करता है। "पूरा नाटक एक जटिल संसार रचता है जिसमें एक तरफ भीतरी शांति की लगभग दार्शनिक खोज है तो दूसरी तरफ रोज की भौतिक समस्याएँ भी हैं। युद्ध, आर्थिक दबाव, राजनीतिक भ्रष्टाचार जैसी लतों के आम आदमी पर प्रभाव हैं एक तरफ इन सभी तुच्छ चीजों को छोड़ने की इच्छा है तो दूसरी तरफ इनके विरुद्ध लड़कर आम आदमी की ज़िंदगी बेहतर बनाने की अभिलाषा भी है।"[7]

नाटक 'देख रहे हैं नैन' दो अंकों और तेरह दृश्यों में विभक्त है। प्रथम अंक में सात दृश्य तथा द्वितीय अंक में छः दृश्य हैं। इसकी कथावस्तु यह है कि विराट चंदनपुर का एक ईमानदार कर्तव्यनिष्ठ आम नागरिक है। वह राजा विजय देव को कठिन समय में राज्य के आक्रमणकारियों से बचाता है। लेकिन इस युद्ध में उससे अनजाने में आक्रमणकारियों की ओर से लड़ रहे, अपने ही भाई प्रताप राय की हत्या हो जाती है। इसी मृत भाई की दो आँखें विराट की सारी ज़िंदगी पीछा करतीं हैं। विराट अपने कृत्य से व्यथित होकर राजा विजय देव द्वारा दिये गये सेनापति पद को स्वीकार नहीं करता है और प्रण लेता है कि वह कभी शस्त्र नहीं उठाएगा, जिससे किसी का जीवन नष्ट हो। जिस कारण राजा उसे न्यायाधीश बना देता है। परन्तु इस घटना के छः वर्ष उपरान्त ही किसी अपराधी को ग्यारह साल की सजा देते समय विराट को उसकी आँखों में अपने मृत भाई की आँखें दिखने लगती हैं तथा अपराध बोध का अनुभव होता है। वो पुनश्च राजा से प्रार्थना करता है कि उसे ऐसा कोई काम दिया जाए कि जिससे किसी का अहित न हो। तब राजा उसे कुछ ज़ागीर देकर दायित्व से मुक्त कर देता है। छः साल बाद विराट का पुत्र भाग्यवती एक दास को मार–मार कर लहूलुहान करता है, उस असहाय दास की आँखों में भी विराट को अपने भाई की आँखें दिख जाती हैं। जो उसके अपराध बोध को फिर से उभारती हैं। अंततः वह सारी ज़मीन–जायदाद छोड़कर, सन्यासी–साधू बन जाता है। विराट के छः साल की तपस्योपरांत, उसके प्रभाव से साधू बने एक व्यक्ति की पत्नी की आँखों में भी अपने मृत भाई की आँखें घूरती दिखाई देती हैं क्योंकि उसके तीनों बच्चे भूख से तड़पकर मर जाते हैं। जिसके लिए वह औरत विराट को ही ज़िम्मेदार मानती है। विराट पुनः आत्मग्लानि से पीड़ित होता है और राजा के समीप जाकर तुच्छ से तुच्छतम काम माँगता है, जिसे करने से किसी की क्षति न हो। इस बार राजा असंयत हो जाता है और उसे चांडालों का काम करने के लिए कह देता है, जिसे विराट सहर्ष–सहज स्वीकार कर लेता है तथा श्मशान भूमि में चिताओं को जलाने लगता है। इसी दौरान राजा विजय देव के राज्य में प्लेग नामक महामारी फैल जाती है और प्रजा

[7] वही

विद्रोह कर देती है। विराट लाशों पर लाशें जलाता रहता है एवं जनता व जनता द्वारा मारे गए राजा की लाश को उघते हुए प्लेग से पीड़ित हो जाता है और अंततः राजा सहित उसकी भी मृत्यु हो जाती है।

इस नाटक का केन्द्रीय गीत 'देख रहे हैं नैन बावरे, देख रहे हैं नैन' विराट की कहानी और उसके जीवन–परिवेश की सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों को व्याख्यायित करता है तथा अपनी नाटकीय तनाव व संघर्ष से रंगमंचीय गति पकड़ता है। हबीब तनवीर ने इस नाटक के प्रथम अंक के पहले दृश्य में बाजार को चित्रित किया है। जिसमें युद्ध की आशंका से भयभीत तथा आर्थिक विपन्नता से उत्पन्न प्रजा को दर्शाया गया है। राज्य में शान्ति के प्रतीक हंसों के जोड़े को लेकर कोरस में एक गीत है तथा जिसके विघटन से शांति व्यवस्था व प्रजातंत्र के संकट को चित्रित किया गया है। "फिर एक दिन ऐसा आया वो दोनों हंस सिधारे । /दिन का सूरज भी कुम्हलाया मिट गये रात के तारे । / किसने ये धन छीन लिया किसने ये दौलत लूटी? / बैठ गया राजा का दिल, प्रजा की हिम्मत टूटी ।"[8] हबीब तनवीर के नाटकों में लोक गीतों और नृत्यों का समुचित प्रयोग मिलता है। नाटक का प्रारंभ 'जा दिन जनम लिए उतपंथी जा दिन/ जनम लिए' से होता है लेकिन इसका केन्द्रीय भाव गीत 'देख रहे हैं नैन बावरे' ही है।

इस नाटक में प्रयुक्त गीतों की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए हबीब तनवीर का मंतव्य है कि "नाटक में दूसरा परिवर्तन गीतों के कारण हुआ है। कविता की भाषा से नाटक के बुनियादी ख्याल को जो फायदा पहुँचा सकता था, शायद पहुँचा और गालिबन नाटक में ज़्यादा गहराई या गई।"[9] दरअसल हबीब तनवीर के नाटक में नाट्यालेख की भाषा, रंग भाषा, काव्य भाषा, नृत्य और संगीत की भाषा से नाट्यनुभूति की अभिव्यक्ति होती हैं, जिसकी सृष्टि लोक संस्कृति की परंपरा से होती है, जहाँ अभिनेता के ताल, गति, लय और समूहन में संबद्धता है। इस नाटकीय संपूर्णता में लोक भाषा की विशिष्टता भी निरूपित होती है। जिसके महत्त्व को गिरीश रस्तोगी रेखांकित करती है– "लोक भाषा में जितनी विविधता है, ताज़गी है, उसके महत्त्व को भी विभाजन से या हीनभावना से घटाना नहीं चाहिए। ग्राम्य, गँवारू, अप्रौढ़ भाषा भही महत्त्वपूर्ण है– ज्यादा व्यंजक, ध्वनिमय, लयात्मक, ज्यादा संगीतात्मक।"[10]

इस नाटक में युद्ध की आशंका से बाज़ार की परवर्तित मानसिकता का हबीब तनवीर ने बहुत ही सजीव चित्रण किया है। इसकी समसामयिकता समकालीन बाजार की संस्कृति और जनता के संबंधों को भी चित्रित करती है। कहा जाता है कि 'युद्ध में हार हो या जीत, लाभ व्यापारी वर्ग का ही होता है।' पूँजीपतियों व सत्तधीशों

[8] कलावार्ता- हबीब तनवीर : एक गाथा पुरुष का बनाना- जावेद मालिक, अंक- 103, पृष्ठ संख्या- 146-47

[9] वही, पृष्ठ संख्या- 8

[10] रंग भाषा- गिरीश रस्तोगी, पृष्ठ संख्या- 24

को प्रजा के दुःख–दर्द से क्या ही मतलब है। नाटक की यह घटना अपने समकाल की दुर्घटना–सी लगती है। संवाद दृष्टव्य है– " रामबाबू : अरे गिरधारी, देख रहे हो बाजार में क्या आग लगी हुई है; अभी पिछले हफ्ते चावल इसी दुकान में रुपये के दो मन बिक रहे थे, आज लाला जी कहते हैं–चावल एक रुपये एक मन। गिरधारी : कोई हारे, कोई जीते, लालाजी को कोई फरक नहीं पड़ता। अनाज तो सब खाते हैं।"[11] हबीब तनवीर ने इस नाटक में अपने प्रसिद्ध नाटक 'आगरा बाज़ार' से भिन्न 'बाज़ार की संस्कृति' का सृजन किया है। 'आगरा बाज़ार' में आम पेशेवर की परेशानी और कवि नज़ीर के जीवन चरित्र का मानवीय चित्रण मिलता है जबकि 'देख रहे हैं नैन' में युद्ध के साये के आतंक के भीतर प्रजा का शोषण दिखाई पड़ता है। जहाँ जनता युद्ध से उपजे संकट के निवारण हेतु विराट की ओर तकती, राह देखती है और उससे उम्मीद व अपेक्षा रखती है। नाटक में बाजार के प्रत्येक दृश्य में आये पात्र, एक पर्यवेक्षक की भांति विषम परिस्थितियों की ओर संकेत करते चलते हैं। भारतीय नाट्य परम्परा में ये पात्र घासीराम कोतवाल (विजय तेंदुलकर) और अंधायुग (धर्मवीर भारती) के अंग्रेज तथा प्रहरी की ही तरह हैं। जो अपनी विशिष्ट भूमिका द्वारा नाटक में घटित घटनाओं एवं उसके प्रभावाओं की चर्चा करते हैं। इस नाटक में 'अंधायुग' के प्रहरियों की तरह ही बाज़ार में लोग युद्ध की विभीषिका से उपजे हालत–हालातों पर टिप्पणी करते हैं।

नाटक के पहले अंक के दूसरे दृश्य में राजा विजय देव, विराट से राज्य में व्याप्त संकट से मुक्ति के लिए प्रार्थना करता है। जिसके लिए विराट का चरित्र एक कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदार नागरिक की तरह प्रस्तुत होता है, उसका स्वदेश प्रेम राजा को राजकीय संकट से उबार देता है। इस अंक के तीसरे दृश्य (दुश्मन का खेमा) में विराट के हाथों युद्ध में अपने ही भाई की हत्या हो जाती है। यही नाटक का केन्द्रीय बीज तत्व है, जो कि पूरे नाटक में विराट के चरित्र और उसके कर्मों को संघर्षरत मानवीय संवदेना युक्त दिखाता है। नाटक में विराट देखता है कि उसके भाई की आँखें उसे घूर रहीं हैं और हत्या के अपराध बोध से वह चिंतित–बैचैन हो उठता है। "विराट : बड़े भैया, यह क्या हो गया? यह मैंने क्या कर दिया? अपने हाथों अपने भाई का खून! भाई का खून मेरे दामन पर है, कैसे छुटकारा पाऊँ? क्या करूँ? क्रोध भरी तुम्हारी आँखें मुझे घूर रहीं। इसका प्रयाश्चित? आखिर इसका क्या प्रायश्चित है?"[12] इस आत्म–ग्लानि से प्रलाप के क्षण में कोरस द्वारा एक गीत प्रस्तुत होता है। जो विराट की मानसिक की स्थिति को झलकाता है। सही मायनों में कहें तो यह नाटक युद्ध की त्रासदी से उत्पन्न विषम परिस्थितियों की विद्रूपताओं और पीड़ाओं की अभिव्यक्ति है।

"देख रहे हैं नैन बावरे, देख रहे हैं नैन s s s s

[11] देख रहे हैं नैन- हबीब तनवीर, पृष्ठ संख्या- 16

[12] देख रहे हैं नैन- हबीब तनवीर, पृष्ठ संख्या- 16-17

कौन हो तुम, क्यों देख रहे हो, मुझसे तुमको काम

दो नैनों ने उलट दिया होठों तक आया जाम

छीन लिया दो नैनों ने सब जीवन का सुख चैन s s s s ।"[13]

इस नाटक के युद्ध में राजा विजय देव का राज्य विराट की बहादुरी के कारण बच जाता है। जिससे प्रभावित होकर राजा विजय देव, उसे सेनापति बनाना चाहते हैं लेकिन विराट हत्या के अपराधबोध से दबा हुआ है। वह और कोई अन्य युद्ध नहीं चाहता है। फलतः विराट राजा के समीप जाकर कहता है कि वह जान गया है कि तलवार सत्ता की निशानी और सत्ता सत्य की दुश्मन है। "राजा : क्या कहा? / विराट : महाराज, मैं अपराधी हूँ। मैं दुबारा तलवार को हाथ नहीं लगाना चाहता।.... विराट : मैं समझ गया हूँ कि जो भी हत्या के काम में भाग लेगा वह स्वयं हत्यारा है।.... विराट : वे आँखें बराबर मेरा पीछा कर रही हैं। वे कह रही हैं कि मुझसे अन्याय हुआ है...महाअन्याय! कुछ समझ में नहीं आता महाराज! मैं अन्याय नहीं, न्याय करने के लिए बढ़ा था।"[14] गोया विराट की यह चिंता स्वाभाविक है, युद्ध में हिंसा और अन्याय ही सर्वत्र होते हैं। पक्ष और विपक्ष दोनों तरफ ही रक्तपात तथा अनगिनत जीवन की आहुतियाँ ही चढ़ जाती हैं। जिसे नाट्यकार का दार्शनिक नायक विराट अपनी मानवीय संवेदना से रूपायित करता है।

राजा विराट को न्यायाधीश बना देता है लेकिन यहाँ पर भी उसके भाई की आँखें पीछा करती हैं और उसके कर्म पर प्रश्नचिह्न लगा जाती हैं। चौथे दृश्य (अदालत) में एक अपराधी को हत्या के सिलसिले में विराट ग्यारह वर्ष की सजा सुनाता है लेकिन अपराधी उसके द्वारा किये न्याय को मौत से बदतर मानता है और स्वयं विराट को ही अपराधी ठहरा देता है। "मुलजिम : दया? मुझे तुम्हारी दया की भीख नहीं चाहिए। तुमसे दया की क्या उम्मीद? तुम जल्लाद हो। तुमसे सिर्फ मौत की उम्मीद की जा सकती है।"[15] विराट को उसकी आँखों में भी अपने मृत भाई की आँखें अचानक दिखाई पड़ जाती हैं। जो उसके द्वारा किए गए न्याय पर प्रश्नचिह्न लगाती हैं। तिस पर वह राजा के पास पुनश्च जाकर कहता है कि– "विराट : काम से मुझे एक महीने की मौलत दीजिए। मैंने छः साल देश में न्याय का निर्णय किया। कितना सही था, कितना गलत, ये मैं नहीं जानता। मैं विचार करना चाहता हूँ। अपने पिछले कामों पर गौर करना चाहता हूँ ।"[16] विराट का यह आत्म चिंतन व मूल्यांकन उसके चरित्र की विशेषताओं को और भी गहरा तथा व्यापक कर जाता है। नाटक में उसकी बेचैनी नाटकीयता को रोचकता प्रदान करती हैं और समकालीन विडम्बनाओं को भी दर्शाती हैं। जिसे नाट्यकार ने सधे कोरस के

[13] वही
[14] वही, पृष्ठ संख्या- 24
[15] देख रहे हैं नैन- हबीब तनवीर, पृष्ठ संख्या- 27
[16] वही, पृष्ठ संख्या- 33

गीति माध्यम से अभिव्यक्त किया है। यह एक तरह का व्यंग्य भी है। जहाँ समाज में निज स्वार्थ हित की ही रक्षा की जाती है।

"दस घर गिरा मलबे से एक अपना महल बनाया

दस को भूखा मारा दस का भूज अकेला खाया ।

दस को भी बेचैन किया और खुद भी रहा बेचैन।

देख रहे हैं नैन !"[17]

पांचवें दृश्य (तहखाना) में विराट उस अपराधी के पास जाता है और अपने द्वारा किए गए न्याय की यातना को सहने के लिए, उस बंदी से प्रार्थना करता है। विराट इस यातना के अनुभव को व्यक्त करते हुए राजा से कहता है– "मनुष्य के लिए मनुष्य के कर्म पर हुक्म लगाना बहुत कठिन काम है महाराज! जमीन की इन गहराइयों की तह में सैकड़ों इंसान मेरे इशारे पर दफ़न कर दिए गये हैं। आज मैंने पहली बार जाना कि वे किस कष्ट में डाल दिए गए हैं। आज मैंने जाना है कि बदले का न्याय, न्याय नहीं है।"[18] इस बावत राजा विराट को दरिया पार के दस कस्बे ज़ागीर में देता है। जिससे उसे न्यायिक कर्मों से मुक्ति मिल सके। हबीब तनवीर ने नाटक के दृश्य छः (गुलामों का बाज़ार) में दास–दासियों की खरीद–फरोख्त को चित्रित किया है। यहाँ उन्होंने दास प्रथा की अमानवीय कुरीतियों को उजागर करते हुए समाज की विकृत मानसिकता और पूँजीवादी 'व्यवस्था की अव्यवस्था' को दर्शाया है। शोषण की चरम पराकाष्ठा का यह दृश्य अपने विकृत रूप में समकालीन जीवन परिवेश की संस्कृति को प्रतिबिंबित करता है। इस विषमता से उत्पन्न सवाल और भी गहरे हो जाते हैं। जब सातवें दृश्य (खेत) में विराट का पुत्र भाग्यवती, एक दास को लहूलुहान कर देता है। तब विराट इस सामंती–पूँजीवादी व्यवस्था की अव्यवस्था और मानसकिता के प्रति घृणित स्वर में अवहेलना व प्रायश्चित करता है तथा दासों को मुक्त कर देता है। विराट को अपने पुत्र द्वारा प्रताड़ित उस दास की आँखों में भी अपने भाई की आँखें नज़र आने लगती हैं तथा मानवीय संवेदना और प्रतिरोध स्वरूप वह अपने पुत्रों को आदेश देता है कि दासों को अमानवीयता से मुक्त कर दिया जाय। जिसका उसके पुत्र अक्षय और भाग्यवती जबरदस्त विरोध करते हैं। संवाद दृष्टव्य है–

"अक्षय : ये दास–दासी हमारे हैं। ये ज़मीन हमारे अपनी ज़मीन है।... अक्षय : दास अपनी ज़िंदगी का मालिक नहीं होता सिर्फ अपने मालिक का सेवक होता है।/ विराट : मैं आदमी आदमी में फर्क नहीं जानता ।

[17] वही, पृष्ठ संख्या- 35

[18] वही, पृष्ठ संख्या- 36

मेरे लिए इंसान एक बराबर है।.... भाग्यवती : मैं आपसे पूछ रहा हूँ कि अगर आपने इन सब गुलामों को आज़ाद कर दिया तो हमारी ज़िंदगी का क्या होगा?...।"[19]

यह प्रश्न सार्वकालिक और सार्वजनीन है। यह वर्ग संघर्ष और उसकी विसंगतियों पर तीक्ष्ण टिप्पणी भी है। जहाँ पर मानव–मानव में भेद और अमानवीयता व अत्याचार का स्वर देखने को मिलता है। वहीं विराट इस व्यवस्था के विरुद्ध खड़ा होता है लेकिन पुत्रों के विरोध के कारण वह इस प्रकार की 'व्यवस्था की अव्यवस्था या अव्यवस्था की व्यवस्था' को त्यागकर साधू बन जाता है।

नाटक 'देख रहे हैं नैन' के दूसरे अंक के प्रथम दृश्य (दरबार) में राजा विजयदेव विराट से मिलने को बेचैन रहते हैं और मगर उसका कहीं पता नहीं चलता है। वह अपने दीवान से विराट को ढूँढने के लिए कहते हैं। दृश्य दो (बाज़ार) में बाज़ार की मंहगी कीमतों का जिक्र, विराट की खोज़ के बावत सिपाहियों का अत्याचार चित्रित किया गया है। इसके तीसरे दृश्य (जंगल) में 'अब रहिये बैठ इक जंगल में सब–कुछ तजकर बैराग लिए' एक सधा हुआ कोरस गीत है, जिससे नाटकीय विडम्बना संप्रेषित होती है। विराट की गोद में एक औरत अपना मुर्दा बच्चा देती है और वह विराट से कहती है कि 'तुमने मुझसे मेरा आदमी छीन लिया' और तुम्हीं मेरे बच्चे के कातिल हो। विराट की समझ में कुछ नहीं आता है। औरत कहती है " तुम्हारी भक्ति का यही हाल रहा तो देख लेना, गाँव के गाँव उजड़ जायेंगे। वहाँ बैठ तुम चिड़ियों को दाना–पानी देते रहे और उधर मेरे बच्चे भूख से तड़प–तड़प कर मरते रहे।"[20] विराट की समझ में कुछ नहीं आता है और तत्क्षण उस औरत की घूरती आँखों में विराट को अपने भाई की आँखें दीख जाती है। विराट इस सोच में था कि वह किसी का अहित नहीं कर रहा है लेकिन उसकी यह तपस्या भी किसी के दुःख का कारण बन गयी है।

दृश्य चार में विराट पुनः राजा के समीप जाता है और कहता है– 'महाराज अब मैं जान गया हूँ कि निष्काम कर्म भी स्वयं कर्म है।' वह कहता है कि " महाराज, मैं आपसे एक अदना सा काम माँगने आया हूँ और कुछ नहीं! कोई ऐसा काम जिसमें केवल सेवा हो और कुछ नहीं। अभी आपका एक और आखिरी अहसान बाकी है। मुझ पर दया कीजिए। यह अहसान भी कर दीजिए। मुझे आदेश दीजिए।"[21] तब राजा आवेश में आकर विराट को चांडाल का कर्म करने के लिए कहते हैं। पांचवें दृश्य में श्मशान भूमि का चित्रण किया गया है। जिसमें दो चांडालों के संवाद से ज्ञात होता है कि राज्य में प्लेग से मरने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। चांडाल, बिरजू से कहता है– "तूने सुना नहीं? शहर में प्लेग के मरे हुए आदमियों को जलाते रहेंगे तो कब तक जिन्दा

[19] वही, पृष्ठ संख्या- 39-40
[20] वही, पृष्ठ संख्या- 74
[21] वही, पृष्ठ संख्या- 79

बचेंगे? उठ, तू भी चल यहाँ से! बिरजू..."[22] इस नाटक में हबीब तनवीर ने चांडालों के त्रासदपूर्ण टिप्पणी के माध्यम से यह कहने की कोशिश की है कि आदमी को अपना कर्म नहीं अपना जीवन प्यारा लगता है लेकिन वहीं विराट के नाटकीय अन्तर्विरोध द्वारा जीवन संघर्ष में निःस्वार्थ निष्काम कर्म की प्रेरणा झलकती है। वह चांडालों के साथ नहीं जाकर, शहर में फैले प्लेग से मृत लोगों को श्मशान भूमि में लाकर जलाता रहता है।

दृश्य छः (बाज़ार) में प्रजा राजकीय व्यवस्था के प्रति राज्य में विद्रोह कर देती है और इस आपातकालीन परिस्थिति में लूट–पाट मचाती है। इस नाटक में प्लेग महामारी की विकराल यातना के साथ ही मानवीय यातना व नृशंस हत्या से निर्मित अराजकता को दर्शाया गया है। विराट के नाम पर राजनैतिक रोटी सेंकने वाले लोग सत्ता दमन में जुट जाते हैं। जबकि विराट इन कृत्यों से बेखबर श्मशान में लाशें ढ़ोता और उन्हें जलाता रहता है। तनवीर इस प्रकार की राजनैतिक 'अव्यवस्था की व्यवस्था' के प्रति आम नागरिक की टिप्पणी द्वारा हस्तक्षेप करते हैं। जनता कहती कि राजनेताओं ने उन्हें जान–बूझकर छूट दी है, जिससे कि वो अपना उल्लू सीधा कर पाएं। नाटक में उन्मादी अहिसंक भीड़ के अंधेपन से राजा आहत हो जाता है और विराट उसे उठाकर ले जाता है। तब उस क्षण के मार्मिक संवाद को हबीब तनवीर ने बड़ी संजीदगी से लिखा है– "विजयदेव : लोगों ने मुझ पर तुम्हारा नाम लेकर हमला किया, 'विराट ज़िन्दाबाद' कहा और मुझे मार डाला! विराट : धीरज रखिये महाराज! वो लोग नासमझ हैं। विजयदेव : नहीं, नासमझ नहीं हैं! उन्हीं लोगों ने तो यह पहेली हल की है। कर्म..अरे यह वज़न ...मेरा सर भारी हो गया है, इसे उतार दो भाई! ये वज़न ..इतना वज़न...।"[23]

इस प्रकार संघर्षयुक्त त्रासदी के साथ नाटक अपने अंत की ओर बढ़ता है। राजा की मृत्यु विराट की गोद में हो जाती है और विराट उसे उठाने की कोशिश में मृत्यु को प्राप्त होता है। सवाल यह उठता है कि एक राजा, जो जीवन भर राज्य करता है और सुख से रहता है, उसका अंत और एक कर्मयोगी, जो सबके सुख–हित में ही अपना हित–सुख देखता है; उन सबकी नियति एक सी है। आत्मिक सुख और शान्ति किसे मिलती है? नाटक का अंत एक त्रासदी है और जिसकी नाट्यानुभूति से मानवीय संवेदना की अभिव्यक्त होती है। यह नाटक अपने समकालीनता से सवाल करता है और जीवन मूल्यों में व्याप्त मानवीय संवेदना के प्रति गहरी आस्था रखता है। जिसके प्रति नाटककार ने अपनी संवेदनात्मक सम्भावानाओं की तलाश में नाटकीय यूटोपिया का गठन किया है। जिसमें 'विराट के भाई' की आँखें प्रतिरोध की संस्कृति को स्वर देती हैं और अन्याय के

[22] वही, पृष्ठ संख्या- 80-81
[23] देख रहे हैं नैन- हबीब तनवीर, पृष्ठ संख्या- 93

प्रति हस्तक्षेप भी करती हैं तथा विराट का निःस्वार्थ संघर्षरत निष्काम कर्म मानवीय संवेदना को अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. गिरीश रस्तोगी (1999): रंग भाषा; राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, बहावलपुर हाउस, नई दिल्ली–110001
2. भारतरत्न भार्गव (2006): रंग हबीब; राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, बहावलपुर हाउस, नई दिल्ली–110001
3. हबीब तनवीर (1996): देख रहे हैं नैन, पुस्तकायन, नई दिल्ली– 1110002
4. सं. कमला प्रसाद: कलावार्ता; अंक–103, वर्ष 21, मध्य प्रदेश कला परिषद, भोपाल– 462003
5. सं. महावीर अग्रवाल: सापेक्ष– 47, हबीब तनवीर का रचना संसार; अंक– जनवरी 2004–दिसम्बर 2006

सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग, रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनी

avdhesh.1205@gmail.com